B.A.I.H PREMCHANDYUGIN UPNAYASHKAR हिन्दी
9.7.20 L.2 G.P.R

राहुल सांकृत्यायन और इलाचंद जोशी प्रेमचंद के समसामयिक लेखक होते हुए भी प्रेमचन्दोत्तर काल में ही उपन्यासकारों के रूप में अधिक प्रसिद्ध हुए। अतः उनकी गणना प्रेमचंद के परवर्ती उपन्यासकारों में ही की जायेगी। राहुल जी ने ऐतिहासिक उपन्यास लिखे हैं और 'सिंह सेनापति' और 'जय यौधेय' उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं तथा इलाचंद जोशी घृणामयी, लज्जा, संन्यासी, पर्दे की रानी, प्रेत की छाया, निर्वासित, मुक्तिपथ, सुबह के भूले, जिप्सी और जहाज का पंछी नामक मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों के रचयिता हैं।

डॉ रामरतन भटनागर के कथनानुसार मैं प्रेमचन्दोत्तर औपन्यासिक प्रवृत्तियाँ इस प्रकार दी जा सकती हैं

प्रेमचंद के उपन्यास, कम से कम वृहद राजनैतिक उपन्यास, गाँव के जीवन तक सीमित रहे थे, गोदान में उन्होंने गाँव के विघटन की कहानी कही है और गोबर को नगर से विकसित औद्योगिक जीवन में पहुंचा कर वह कदाचित मजदूर जीवन की कहानी कहने जा रहे हैं। बाद के लेखकों ने इसी को विशेष विकसित किया।

प्रेमचंद के साहित्य में अपने अन्तर्विरोधों के कारण मध्यवर्ग व्यंग्य का विषय बना है। परन्तु कम से कम उपन्यासों में वह उनकी सभी दिशायें होकर नहीं चलते। प्रेमचंद के बाद के यथार्थवादी कलाकार गाँव में नहीं बैठ सके। उनके लिए नगर ही महत्वपूर्ण हो गये हैं।